अध्याय
05

मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

सीखने के प्रतिफल - इस अध्याय से बच्चे मुद्रण या छपाई के अविष्कार एवं दुनिया में इसके विस्तार के बारे में जानेंगे।

परिचय

मुद्रित या छुपी हुई सामग्री के बगैर दुनिया की कल्पना भी हम नहीं कर सकते हैं।

हम अपने चारों तरफ जहां नजर दौड़ाते हैं हमें कोई न कोई छपी चीजें दिखाई देती है। किताबें, पत्र पत्रिकाएं, अखबार, मशहूर तस्वीरों, के नकलें, सड़क के किनारे विज्ञापन और सिनेमा के पोस्टर आदि। छपा हुआ साहित्य पढ़ते हैं, पेंटिंग देखते हैं, अखबार पढ़ते हैं और सार्वजनिक दुनिया में चल रहे विवादों का जायजा लेते हैं।

हमें यह सोचने की जरूरत ही नहीं पड़ती की छपाई के पहले भी एक दुनिया थी छपाई का अपना एक इतिहास है।

यह इतिहास क्या है, समाज में मुद्रित सामग्री कब से चलने शुरू हुई, आधुनिक दुनिया को बनाने में इसकी क्या भूमिका थी।

इस अध्याय में हम मुद्रण के इसी इतिहास को देखेंगे कैसे यह पूर्वी एशिया से शुरू होकर यूरोप और भारत में फैला।

© JCERT not to be republished

शुरूआती छपी किताबें

शुरूआती छपी किताबें

- मुद्रण की सबसे पहली तकनीक चीन, जापान और कोरिया में विकसित हुई।
- यह छपाई हाथ से होती थी। तकरीबन 594 ईसवी से चीन में स्याही लगे काठ के ब्लॉक या तख्ती पर कागज को रगड़ कर किताबें छापी जाने लगी थी।
- पारंपरिक चीनी किताब एकौरडियन शैली में किनारों को मोड़ने के बाद सील कर बनाई जाती थी।

किताबों का सुलेख या खुशनवीसी करने वाले लोग दक्ष सुलेखक होते थे, जो हाथ से बड़े सुंदर सुडौल अक्षरों से सही-सही कलात्मक लिखाई करते थे।

मुद्रित सामग्री का सबसे बड़ा उत्पादक चीनी राजतंत्र था। यह अपने विशाल नौकरशाही की नियुक्ति के लिए सिविल सर्विसेज की परीक्षाओं के लिए बड़ी तादाद में किताबें छपवाता था।

17 वी सदी में चीन में छपाई के इस्तेमाल में विविधता आई। अब मुद्रित सामग्री का उपयोग व्यापारी वर्ग तथा अमीर महिलाए भी करने लगे।

कुछ महिलाओं ने स्वरचित काव्य और नाटक भी छापे।

19वीं सदी के अंत में पढ़ने की नई संस्कृति नई तकनीक के साथ आई। पश्चिमी शक्तियों द्वारा अपनी चौकियां स्थापित करने के साथ ही पश्चिमी मुद्रण तकनीक और मशीनी प्रेस का आयात भी हुआ।

शंघाई प्रिंट संस्कृति का नया केंद्र बन गया।

हाथ छपाई के जगह पर धीरे-धीरे मशीनें या यांत्रिक छपाई ने ले ली।

जापान में मुद्रण

चीनी बौद्ध प्रचारक (768 - 770) ईसवी के आसपास छपाई की तकनीक को लेकर जापान आए।

जापान की सबसे पुरानी 868 ई0 में छपी पुस्तक डायमंड सूत्र है, जिसमें पाठ के साथ-साथ काठ पर खुदे चित्र हैं।

18वीं सदी के अंत में एदो(बाद में टोक्यो शहर के नाम से जाना गया)के शहरी ईलाके की चित्रकारी में शालीन शहरी संस्कृति का पता मिलता है।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

यूरोप में मुद्रण का आना

यूरोप में मुद्रण का आना

- सदियों तक चीनी रेशम और मसाले रेशम मार्ग से यूरोप आते रहे थे।
- 11वीं सदी में चीनी कागज भी उसी रास्ते यूरोप पहुंचा।
  13वीं शताब्दी के मध्य में, त्रिपीटका कोरियाना, वुडब्लॉक्स मुद्रण के रूप में बौद्ध ग्रंथों का कोरियाई संग्रह है। इन ग्रंथों को लगभग 80,000 वुडब्लॉक्स पर उकेरा गया था। इन्हें 2007 में यूनेस्को मेमोरी ऑफ़्र द वर्ल्ड रजिस्टर में अंकित किया।
  कितागावा उतामारो 1753 ई. में एदो में पैदा हुए उतामारो ने उकियो (तैरती दुनिया के चित्र) नाम की एक नयी चित्रकला शैली में अहम योगदान किए, जिनमें आम शहरी जीवन का चित्रण किया गया। इनकी छपी प्रतियाँ यूरोप और अमेरिका पहुंची और मोने, मोने और वान गांग जैसे चित्रकारों को प्रभावित किया।
- कागज में मुन्शीयों द्वारा सावधानीपूर्वक लिखी गई पांडुलिपियों के उत्पादन को मुमकिन बनाया।
- फिर 1295 ई0 में मार्कोपोलो नामक महान खोजी यात्री चीन में काफी साल तक खोज करने के बाद इटली वापस लौटा।
- चीन के पास वुड ब्लाक वाली छपाई की तकनीक का ज्ञान मार्कोपोलो अपने साथ लेकर इटली लौटा। इसके बाद इतालवी भी तख्ती की छपाई से किताबें छापने लगा और जल्द ही यह तकनीक बाकी यूरोप में फैल गई।
- अब व्यापारी और विश्वविद्यालय के विद्यार्थी सस्ती मुद्रित किताबें खरीदने लगें। किताबों की मांग बढ़ने के साथ-साथ यूरोप भर के पुस्तक विक्रेता विभिन्न देशों में निर्यात भी करने लगें। बढ़ती मांग की आपूर्ति के लिए किताबें छापने के अब तेज और सस्ती मुद्रण तकनीक की जरूरत थी।
- ऐसा छपाई की एक नई तकनीक के आविष्कार से ही संभव होता जो 1430 के दशक में स्ट्रैटसबर्ग के योहान गुटेनबर्ग ने अंततः कर दिखाया।

गुटेन्बर्ग और प्रिंटिंग प्रेस

- गुटेनबर्ग ने प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार किया।
- गुटेनबर्ग के पिता व्यापारी थे। वह बचपन से ही तेल और जैतून पेरने की मशीनें देखता आया था।
- पत्थर पर पॉलिश करने की कला, सुनारी और शीशे की इच्छित आकृतियों में गढ़ने में उसकी महारत हासिल थी।
- अपने ज्ञान और अनुभव का इस्तेमाल उसने अपने नए आविष्कार में किया।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

© JCERT not to be republished

जैतून प्रेस से हीं प्रिंटिंग प्रेस का मॉडल या आदर्श बनाया और सांचे का उपयोग अक्षरों की धातुई आकृतियों को गढ़ने के लिए किया।

गुटेनबर्ग ने 1448 ई0 तक अपना यह यंत्र हासिल कर लिया था। उसने जो पहली किताब छापी वही बाइबिल की 180 प्रतियां बनाने में उसे 3 साल लगे।

करीब 100 साल के दरमियान (1450 – 1550) यूरोप के ज्यादातर देशों में छापे खाने लग गए थें।

15 वीं सदी के दूसरे हिस्से में यूरोप के बाजार में दो करोड़ मुद्रित किताबें आई।

16 वीं सदी में यह संख्या 20 करोड़ हो गई थी हाथ की छपाई की जगह यांत्रिक मुद्रण के आने पर ही मुद्रण क्रांति संभव हुई।

मुद्रण क्रांति

प्लाटेन : लेटरप्रेस छपाई में प्लाटेन एक बोर्ड होता है, जिसे कागज के पीछे दबाकर टाइप की छाप ली जाती थी। पहले यह बोर्ड काठ का होता था, बाद में इस्पात का बनने लगा। स्क्रू से लगा लंबा हैंडल देखें इसकी मदद से स्क्रू घुमाकर प्लाटेन को गले कागज पर दबा दिया जाता था। गुटेन्बर्ग ने रोमन वर्णमाना के तमाम 36 अक्षरों के लिए टाइप बनाए और जुगत लगाई कि इन्हें इधर–उधर 'मूव' कराकर या घुमाकर शब्द बनाए जा सकें। लिहाजा इसे 'मूवेबल टाइप प्रिंटिंग मशीन' के नाम से जाना गया और यही अगले 300 सालों तक छपाई की बुनियादी तकनीक रही। हर छपाई के लिए तख्ती पर खास आकार उकेरने की पुरानी तकनीक की तुलना में अब किताबों का इस तरह छापना निहायत तेज हो गया। गुटेर्न्ग प्रेस एक घंटे में 50 पन्ने (एक साइड) छाप सकता था।

मुद्रण क्रांति

परिभाषा

छापेखाने का आविष्कार से पुस्तक उत्पादन के नए तरीके ने लोगों की जिंदगी बदल दी। इसकी बदौलत सूचना और ज्ञान से संस्था और सत्ता से उनका रिश्ता ही बदल गया। इससे लोक चेतना बदली और बदला चीजों को देखने का नजरिया बदला।

नया पाठक वर्ग

छापेखाने के आने से एक नया पाठक वर्ग पैदा हुआ।

छापेखाने के आ जाने से बड़ी तादाद में प्रतियां छपना आसान हो गया।

बाजार किताबों से पट गई।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

© JCERT not to be republished

- पाठक वर्ग भी बेहतर होता गया।
- किताबों तक पहुंच आसान होने से पढ़ने की एक नई संस्कृति विकसित हुई।
- मुद्रण क्रांति के आ जाने से पहले जो जनता मौखिक श्रोता थी वह अब पाठक में बदल गए।
- अब किताबें समाज के व्यापक तबकों तक पहुंच चुकी थी।

धार्मिक विवाद और प्रिंट का डर

- धर्म सुधारक मार्टिन लूथर ने अपने लेखों के माध्यम से कैथोलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना अपनी 95 वें स्थापनाएं में लिखी।
- इसकी छपी प्रति वीटेनवर्ग के गिरजाघर के दरवाजे पर टांगे गए इसमें लूथर ने चर्च को शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दी थी।
- लूथर के लेख एक बड़ी तादाद में छापे और पढ़े जाने लगे इसके नतीजे में चर्च में विभाजन हो गया और प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार की शुरुआत हुई
- कुछ ही हफ्ते में न्यू टेस्टामेंट के लूथर के अनुवाद की 5000 प्रतियां बिक गए और 3 महीने के अंदर दूसरा संस्करण निकालना पड़ा
- प्रिंट के प्रति तहे दिल से कृतज्ञ लूथर ने कहा" मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम देन है, सबसे बड़ा तोहफा"।

मुद्रण और प्रतिरोध

- 16 वीं सदी में इटली के एक किसान मेनोकियो ने किताबें पढ़कर बाइबल के नए अर्थ लगाने शुरू कर दिए इससे कैथोलिक चर्च क्रोधित हो गया।
  प्रोटेस्टेंट धर्म सुधार : सोलहवीं सदी यूरोप में रोमन कैथलिक चर्च में सुधार का आंदोलन। मार्टिन लूथर प्रोटेस्टेंट सुधारकों में से एक थे। इस आंदोलन से कैथोलिक ईसाई मत के विरोध में कई धाराएँ निकलीं।
  इन्क्वीजीशन (धर्म अदालत): विधर्मियों की शिनाख्त करने और सजा देने वाली रोमन कैथलिक संस्था।
  धर्म विरोधेरी : इनसान या विचार जो चर्च की मान्यताओं से असहमत हो।
  मध्यकाल में चर्च विधर्मियों या धर्म–द्रोह के प्रति सख्त था, उसे लगता था कि लोगों की आस्था, उनके विश्वास पर सिर्फ उसका अधिकार है और उसकी बात ही अंतिम है।
- ऐसे धर्म विरोधियों को सुधारने हेतु रोमन चर्च ने इनक्विजिशन आरंभ किया,। और आखिरकार मेनोकियो को मौत की सजा दे दी।
  Jcert textbook (page no 113)
- परेशान चर्च ने प्रकाशक और पुस्तक विक्रेताओं पर प्रतिबंध लगा दी।
- 1558 ईस्वी में रोमन चर्च ने प्रतिबंधित किताबों की सूची प्रकाशित की।

© JCERT not to be republished

पढ़ने का जुनून

पढ़ने का जुनून

- 17वीं और 18वीं सदी में यूरोप में साक्षरता के स्तर में काफी सुधार हुआ।
- 18वीं सदी के अंत तक यूरोप के कुछ भागों में साक्षरता का स्तर 60 से 80% तक पहुंच चुका था।
- अलग-अलग संप्रदाय के चर्चों ने गांव में स्कूल स्थापित कर किसानों और कारीगरों को शिक्षित करने लगे।
- किस्म किस्म के साहित्य पत्रिकाएं, पंचांग, चैपबुक्स आदि सबसे अधिक बिकने वाली किताबें थी
  चैपबुक बेचने वालों को चैंप मैन कहा जाता था
  Jcert textbook (page no. 114)
- फ्रांस में बिब्लियोथिक ब्ल्यू का चलन था यह सस्ते कागज पर छपी और नीली जिल्द में बंधी छोटी किताबें थी
- मुद्रण के आ जाने से अब वैज्ञानिकों और दार्शनिकों के नए विचार और नई खोज भी सामान्य लोगों तक पहुंचने लगी।
- आइज़क न्यूटन ने अपने आविष्कार प्रकाशित करवाएं।
- थॉमस पेन, वाल्टेयर, रूसो जैसे दार्शनिकों की किताबें भी भारी मात्रा में छपी और पढ़े जाने लगे
- 18 वीं सदी में फ्रांस के एक उपन्यासकार लुई सेबेस्तिये मर्सिए ने घोषणा की कि "छापाखाना प्रगति का सबसे ताकतवर औजार है इससे बन रही जनमत की आंधी में निरंकुशवाद उड़ जाएगा"।
  jcert textbook(page no. 115)

© JCERT not to be republished

4.1) मुद्रण संस्कृति और फ्रांसीसी क्रांति

संप्रदाय : किसी धर्म का एक उप–समूह
पंचांग : चाँद, सूरज की गति, ज्वार भाटा के समय और लोगों के दैनिक जीवन से जुड़ी कई अहम जानकारियां देता वार्षिक प्रकाशन।
चैपबुक (गुटका) : पॉकेट बुक के आकार की किताबों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द। इन्हें आमतौर पर फेरीवाल बेचते थे। ये सोलहवीं सदी की मुद्रण क्रांति के समय से लोकप्रिय हुए।

- मुद्रण संस्कृति ने फ्रांसीसी क्रांति के लिए अनुकूल परिस्थितियां रची।
- छपाई के चलते ज्ञानोदय के चिंतकों के विचारों का प्रसार हुआ।
- विचारकों ने परंपरा, अंधविश्वास और निरंकुशता की कड़ी आलोचना की।
- रीति-रिवाजों की जगह विवेक के शासन पर बल दिया जाने लगा।
- हर चीज को तर्क और विवेक की कसौटी पर कसा जाए की मांग की जाने लगी।
- वाल्टेयर और रूसो को प्रबुद्धता के प्रमुख विचारक माना जाता है।
- अब आम जनता भी मूल्यों संस्थाओ और प्रथाओं पर विवाद करने लगी और स्थापित मान्यताओं पर सवाल उठाने लगी।
- 1780 के दशक तक बहुत सारे साहित्य थे जो राजशाही का उपहास करते थे।
- इस प्रक्रिया में कार्टूनों और कैरिकेचरों(व्यंग्य चित्रों) द्वारा जनता के मुश्किलों को और राजशाही भोग विलास को दर्शाया जाता था। भूमिगत घूमने वाली इस साहित्य ने लोगों को राजतंत्र के खिलाफ भड़काया।
  निरंकुशवाद : राजकाज की ऐसी व्यवस्था, जिसमें किसी एक व्यक्ति को संपूर्ण शक्ति प्राप्त हो, और उस पर न कानूनी पाबंदी लगी हो, न ही संवैधानिक।

© JCERT not to be republished

उन्नीसवीं सदी

बच्चे, महिलाएं और मजदूर

- 19वीं सदी में यूरोप में साक्षरता के तीव्र विकास के साथ पाठकों का एक नया वर्ग उभरा जिसमें बच्चे, महिलाएं और श्रमिक शामिल थे।
- फ्रांस में 1857 में सिर्फ बाल पुस्तक के छापने के लिए एक प्रेस या मुद्रणालय स्थापित किया गया।
- लोक कथाओं को फिर से इस तरह लिखा गया कि युवा पाठक उन्हें आसानी से समझ सके।
- कई महिलाएं पाठक और लेखिका भी बनी। 19वीं सदी में छपे उपन्यास के अहम पाठक महिलाएं ही होती थी।
- पेनी मैगजीन या एकपैसिया पत्रिकाएं खासतौर से महिलाओं के लिए तैयार की जाती थी।
  पेनी मैग्जीन का प्रकाशन इंग्लैंड में 1832–1850 के बीच सोसायटी फॉर द डिफ्यूजन ऑफ यूजफुल नॉलेज ने किया। यह मूलतः मजदूर वर्ग के लिए थी।
  Jcert textbook(page no 117)
- 17वीं सदी में किराए पर किताब देने वाले पुस्तकालय की भी स्थापना की गई।
- 19वीं सदी के इंग्लैंड में ऐसे पुस्तकालयों का उपयोग सफेद कांलर मजदूरों दस्तकारों और निम्न वर्गीय लोगों को शिक्षित करने के लिए किया गया।
  यार्कशायर के एक मैकेनिक थॉमस वुड ने बताया कि वह पुराने अखबार खरीदकर शाम के वक्त आग की रोशनी में पढ़ता था। क्योंकि उसके पास मोमबत्ती के लिए पैसे नहीं होते थे। गरीबों की आत्मकथाओं से हमें पता चलता है कि वे मुश्किल हालात में पढ़ने के लिए जद्दोजहद करते थे। बीसवीं सदी के रूसी क्रांतिकारी लेखक मैक्सिम गोर्की की 'मेरा बचपन और मेरे विश्वविद्यालय' इन संघर्षों की कहानियां हैं।
  Jcert textbook (page no 117)
- मशहूर उपन्यास कारों में लेखिकाएं अग्रणी थीं। जेन ऑस्टिन, ब्रांट बहनें, जॉर्ज इलियट आदि।
- उनके लेखन से नई नारी की परिभाषा उभरी, जिसका व्यक्तित्व सुदृढ़ था जिसमें गहरी सूझबूझ थी और जिसका अपना दिमाग था, अपनी इच्छा शक्ति थी।

© JCERT not to be republished

नई तकनीकी परिष्कार या छपाई में अन्य सुधार

- 18वीं सदी के अंत तक प्रेस धातु से बनने लगे थे।
- 19वीं सदी के मध्य तक न्यूयॉर्क के रिचर्ड एम. हो. ने एक शक्ति चालित बेलनाकार प्रेस विकसित किया।
  जो 1 घंटे में 8000 सीट प्रिंट कर सकती थी।
- 19वीं सदी के अंत तक ऑफसेट प्रेस आ गया जिसमें 6 रंगों की एक साथ छपाई मुमकिन थी।
- बीसवीं सदी के आते-आते इलेक्ट्रॉनिक प्रेस भी प्रचलन में आ गया, जिससे छपाई का काम बड़ी तेजी से होने लगा।

अन्य सुधारें

- मशीन में कागज डालने में सुधार हुआ, प्लेट की गुणवत्ता बेहतर हुई, स्वचालित पेपर- रील डाले जाने लगें,रंगो के लिए फोटो विद्युतीय नियंत्रण भी काम में आने लगे। इससे मुद्रित पन्ने का रंग रुप ही बदल गया।
- 1930 के दशक की महामंदी के प्रभाव से पार पाने के लिए पेपर पेन संस्करण निकाला गया जो सस्ता हुआ करता था।

किताब बेचने के नए तरीके

- 19वीं सदी में उपन्यास लिखने की एक हास्य शैली उपन्यासों का धारावाहिक विकसित हुई।
- 1920 के दशक में इंग्लैंड में लोकप्रिय किताबों की एक सस्ती श्रृंखला- शीलिंग श्रृंखला- के तहत छापी गई।
- श्रृंखला शुरू हो जाने के कारण पाठकों की रुचि आगे आने वाली श्रृंखला को पढ़ने में ज्यादा होने लगी।
- किताबों के ऊपर लगने वाली जिल्द का प्रचलन 20वीं सदी में शुरू हुआ।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

भारत का मुद्रण संसार

मुद्रण युग से पहले की पांडुलिपियाँ

- पांडुलिपियाँ - हाथ से लिखी पुस्तकों को पांडुलिपियाँ कहते हैं।
- भारत में संस्कृत अरबी फारसी और विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में हस्तलिखित पांडुलिपियों की पुरानी और समृद्ध परंपरा थी।
  jcert textbook (page no. 119)
- पांडुलिपियाँ ताड़ के पत्तों या हाथ से बने कागज पर नकल कर बनाई जाती थी।
  चित्र–14 – जयदेव के गीत गोविंद के कुछ पन्ने, अठारहवीं सदी। यह एकॉर्डियन शैली में हाथ से लिखी पांडुलिपि का एक नमूना है।
- पन्नों पर बेहतर तस्वीरें भी बनाई जाती थी।
- 19वीं सदी के अंत तक छपाई के आने के बाद भी पांडुलिपियाँ छापी जाती रही।
- पूर्व औपनिवेशिक बंगाल में ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक पाठशालाओं का बड़ा जाल था लेकिन विद्यार्थी आमतौर पर किताबें नहीं पढ़ते थे।
- गुरु (स्मरण) से किताबें सुनाते थे और विद्यार्थी उन्हें लिख लेते थे
- इस तरह कई सारे लोग बिना कोई किताब पढ़े साक्षर बन जाते थे

प्रिंटिंग प्रेस का भारत आगमन

- प्रिंटिंग प्रेस भारत में सबसे पहले 16 वीं सदी में गोवा में पुर्तगाली धर्म प्रचारकों द्वारा, लाया गया।
- पुर्तगाली पुजारियों ने कोंकणी सीखी और कई सारी पुस्तके छापी।
- 1674 ईस्वी तक कोंकणी और कन्नड भाषाओं में लगभग 50 किताबें छापी गई।
- कैथोलिक पुजारियों ने 1579 ई० में कोचिंन में पहली तमिल किताबें छापी और 1713 में पहली मलयालम किताब भी इन्होंने ही छापा।

© JCERT not to be republished

डच प्रोटेस्टेंट धर्म प्रचारकों ने 32 तमिल किताबें छापी।

जेम्स आगस्टस हिक्की ने 1780 ई० में "बंगाल गजट" नामक एक साप्ताहिक पत्रिका का संपादन आरंभ किया।

बंगाल गजट औपचारिक शासन से मुक्त एक स्वतंत्र पत्रिका थी जिसने अपने विज्ञापन में दासों की बिक्री तथा वरिष्ठ अंग्रेज अधिकारियों से जुड़ी गप्पेबाजी भी छापता था।

इससे नाराज होकर गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग्स ने हिक्की पर मुकदमा कर दिया और सरकारी अखबार को प्रोत्साहन दिया जो औपनिवेशिक सरकार की छवि पर होते हमले से रक्षा करे।

पहले भारतीय गंगाधर भट्टाचार्य द्वारा पहला भारतीय अखबार "बंगाल गजट" का प्रकाशन किया गया।

धार्मिक सुधार और सार्वजनिक बहसें

मुद्रण संस्कृति से भारत में धार्मिक सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर बहस शुरू करने में मदद मिली।

राजा राममोहन राय ने 1821 में 'संवाद कौमुदी' प्रकाशित किया इस पत्रिका में हिंदू धर्म के विरोधीवादी विचारों की आलोचना की गई

रूढ़िवादियों ने उनके आलोचनात्मक विचारों को काटने के लिए समाचार पत्र चंद्रिका का सहारा लिया।

1810 में कोलकाता में तुलसीदास द्वारा लिखित रामचरितमानस को छापा गया।
उलमा : इस्लामी कानून और शरिया के विद्वान
फतवा : अनिश्चय या असमंजस की स्थिति में, इस्लामी कानून जानने वाले विद्वान, सामान्यतः मुफ़्ती के द्वारा की जाने वाली वैधानिक घोषणा।

1880 के दशक से लखनऊ के नवल किशोर प्रेस और मुंबई के श्री वेंकटेश्वर प्रेस ने अनेक भारतीय भाषाओं में धार्मिक ग्रंथ को छापना शुरू किया।

© JCERT not to be republished

उत्तरी भारत के उलमा ने सस्ते लिथोग्राफी का प्रयोग करते हुए धर्म ग्रंथ के फारसी और उर्दू अनुवाद छापने शुरू किए और धार्मिक अखबार और गुटके भी निकालें।
jcert textbook (page no 121)

देवबंद सेमिनरी की स्थापना 1867 में हुई।

इस सेमिनरी ने मुसलमानों को रोजमर्रा के जीवन जीने का सलीका और इस्लामी सिद्धांतों के मायने समझाते हुए हजारों फतवे जारी किए।

प्रकाशन के नए रूप

प्रकाशन के नए रूप

- 19वीं सदी के अंत तक नई तरह की दृश्य संस्कृति भी आकार ले रही थी।
- कई छपाई मशीनें चित्रों की नकल भी भारी संख्या में छपने लगे।
- राजा रवि वर्मा जैसे चित्रकारों ने अब जन समुदाय के लिए चित्र बनाएं।
- 1870 के दशक तक पत्र-पत्रिकाओं ने सामाजिक राजनीतिक विषयों पर टिप्पणी करते हुए कैरीकेचर और कार्टून छापने लगे थे।

महिलाएं और मुद्रण

- अब मध्यमवर्गीय घरों में महिलाओं को पढ़ाया जाने लगा। उन्हें स्कूल भेजा जाने लगा।
- कई पत्रिकाओं ने लेखिकाओं को जगह दी और उन्होंने नारी जगत की शिक्षा को बार-बार रेखांकित किया।
- रससुंदरी देवी ने आमार जीवन नामक आत्मकथा लिखी जो 1876 में प्रकाशित हुई यह बंगाली भाषा में प्रकाशित पहली संपूर्ण आत्मकथा थी।
- 1880 में ताराबाई शिंदे और पंडित रमाबाई ने उच्च जाति की नारियों की दयनीय हालत के बारे में जोश और रोष से लिखा।

© JCERT not to be republished

उर्दू तमिल बंगाली और मराठी प्रिंट संस्कृति पहले विकसित हुई।

गंभीर हिंदी छपाई की शुरुआत 1870 के दशक में हुई।

बंगाल में केंद्रीय कोलकाता का एक पूरा इलाका बटाला लोकप्रिय किताबों के प्रकाशन का केंद्र बन गया।
जानी–मानी शिक्षाविद और लेखिका बेगम रोकैया शेखावत हुसेन ने 1926 में, बंग महिला शिक्षा सम्मेलन को संबोधित करते हुए धर्म के नाम पर महिलाओं को पढ़ने से रोकने के लिए पुरुषों की निंदा की।
jcert textbook (page no124)

प्रिंट और गरीब जनता

- 19वीं सदी में मद्रास के शहर में काफी सस्ती और छोटी किताबें चौक चौराहों पर बेची जा रही थी।
- गरीब लोग भी आसानी से उन्हें खरीद और पढ़ सकते थे।
- बीसवीं सदी के आरंभ में सार्वजनिक पुस्तकालय की स्थापना शुरू हुई।
- 19वीं सदी के अंत से जातीय एवं वर्गीय शोषण पर किताबें लिखी जाने लगी थी।
- 1871 में महाराष्ट्र के मराठी आंदोलन के प्रणेता ज्योतिबा फुले ने अपनी पुस्तक गुलामगिरी में जाति प्रथा के अत्याचारों पर लिखा है।
- बीसवीं सदी के महाराष्ट्र में भीमराव अंबेडकर और मद्रास में ईवी रामास्वामी नायकर ने जो पेरियार के नाम से जाने जाते हैं जाति पर जोरदार कलम चलाई और उनके लेखन पूरे भारत में पढ़े गए।
- 1938 में कानपुर के मिल मजदूर काशीबाबा ने छोटे और बड़े सवाल लिखकर और छाप कर जातीय तथा वर्गीय शोषण के बीच का रिश्ता समझाने की कोशिश की।
- 1935 से 1955 के बीच सुदर्शन नायक नामक एक मिल मजदूर का लेखन सच्ची कविताएं नामक एक संग्रह में छापा गया।

© JCERT not to be republished

प्रिंट और प्रतिबंध

प्रिंट पर प्रतिबंध के कारण

- 1798 से पहले का उपनिवेश शासन मुद्रण पर सेंसरशिप या पाबंदी लगाने के बारे में ज्यादा परेशान नहीं था
- मुद्रित सामग्री को नियंत्रित करने के लिए कंपनी के प्रशासन की आलोचना करने वाले और कंपनी के हुक्मरानों के काम को कोसने वाले अंग्रेजो के खिलाफ शुरुआती कदम उठाए थे।
  लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा (1868–1938) वे आधुनिक असमिया साहित्य के एक वरिष्ठ रचनाकार थे। बूढ़ी आइर साधु (दादी की कहानियाँ) उनकी उल्लेखनीय किताबों में से है। उन्होंने असम का लोकप्रिय गीत 'ओ मोर अपुनर देश' (ओ मेरी प्यारी भूमि) भी लिखा।
- कंपनी को इस बात की चिंता थी कि इन आलोचनाओं का लाभ उठाकर इंग्लैंड में बैठे इनके निंदक कहीं भारत पर इनके व्यापारी एकाधिकार पर हमला ना बोल दे।

प्रिंट पर प्रतिबंध के कारण

- कलकत्ता सर्वोच्च न्यायालय 1830 के दशक तक प्रेस की आजादी को नियंत्रित करने वाले कुछ कानून पास किए और ब्रितानी शासन का उत्सव मनाने वाले अखबार को प्रोत्साहन देना चालू किया।
- अंग्रेजी और देसी अखबारों द्वारा गुहार लगाने के बाद 1835 में गवर्नर जनरल बेंटिक प्रेस कानून की पुनर्समीक्षा करने के लिए राजी हो गए।
- फिर उदारवादी थॉमस मैकाले ने पहले की आजादियों को बहाल करते हुए नए कानून बनाए।
- 1857 के विद्रोह के बाद अंग्रेजी सरकार का प्रेस की स्वतंत्रता के प्रति रवैया बदल गया।
- अंग्रेजों ने देसी प्रेस का मुंह बंद करने की मांग की।

© JCERT not to be republished

(9.12) वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट

- आयरिश प्रेस कानून की तर्ज पर 1878 में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट लागू कर दिया गया।
- इससे सरकार को भाषाई प्रेस में छपी रपट और संपादकीय को सेंसर करने का व्यापक हक मिल गया।
- राजद्रोही रिपोर्ट छपने पर अखबार को चेतावनी दी जाती थी। चेतावनी अनसुनी करने पर अखबार को जब्त किया जा सकता थाऔर छपाई की मशीनें छीन ली जा सकती थी
- राष्ट्रवादी आलोचना को खामोश करने की तमाम कोशिशों का उग्र विरोध हुआ।
- जब पंजाब के क्रांतिकारियों को 1907 में काला पानी भेजा गया तो बाल गंगाधर तिलक ने अपने केसरी पत्रिका में उनके प्रति गहरी हमदर्दी जताई।
- नतीजे के तौर पर उन्हें 1908 में कैद कर लिया गया जिसके परिणाम स्वरूप भारत भर में व्यापक विरोध हुए।
  गांधी ने 1922 में कहा– 'वाणी की स्वतंत्रता.... प्रेस की आजादी...... सामूहिकता की आजादी। भारत सरकार अब जनमत को व्यक्त करने और बनाने के इन तीन ताकतवर औजारों को दबाने की कोशिश कर रही है। स्वराज, खिलाफत ... की लड़ाई, सबसे पहले तो इन संकटग्रस्त आजादियों की लड़ाई है।'

निम्नलिखित के कारण दें।

(क) वुडब्लॉक प्रिंट या तख्ती की छपाई यूरोप में 1295 के बाद आई।

उत्तर– 1925 ई. में मार्को पोलो नामक खोजी यात्री चीन में काफी वर्ष तक खोज करने के बाद इटली वापस लौटा। चीन के पास वुडब्लॉक वाली छपाई की तकनीक पहले से मौजूद थी। मार्को पोलो यह ज्ञान अपने साथ लेकर लौटा, फिर क्या था, इतालवी भी तख्ती की छपाई से किताबें निकालने लगे और जल्दी ही यह तकनीक शेष यूरोप में फैल गई।

(ख) मार्टिन लूथर मुद्रण के पक्ष में था और उसने इसकी खुलेआम प्रशंसा की।

उत्तर– धर्म सुधारक मार्टिन लूथर ने रोमन कैथोलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी 95 स्थापनाएँ लिखीं। इसमें लूथर ने चर्च को शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दी थी। शीघ्र ही लूथर के लेख एक बड़ी संख्या में छापे और पढ़े जाने लगे। लूथर के न्यू टेस्टामेंट के अनुवाद की 5000 प्रतियाँ बिक गई और 3 महीने के अंदर दूसरा संस्करण निकालना पड़ा। प्रिंट के प्रति सच्चे मन से कृतज्ञ लूथर ने कहा मुद्रण ईश्वर की दी हुई महानतम देन है सबसे बड़ा तोहफा।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

© JCERT not to be republished

(ग) रोमन कैथोलिक चर्च ने 16वीं सदी के मध्य से प्रतिबंधित किताबों की सूची रखनी शुरू कर दी।

उत्तर–सोलहवीं सदी को इटली के एक किसान मेनोकियो ने अपने इलाके में उपलब्ध किताबों को पढ़ना शुरू कर दिया था। उन किताबों के आधार पर उसने बाइबिल के नए अर्थ लगाने शुरू कर दिए और उसने ईश्वर और सृष्टि के बारे में ऐसे विचार बनाए कि रोमन कैथोलिक चर्च उससे क्रुद्ध हो गया। ऐसे धर्म विरोधी विचारों को दबाने के लिए रोमन चर्च ने जब इक्विजिशन (धर्म–द्रोहियों को दुरुस्त करने वाली संस्था) शुरू किया। धर्म के बारे में उठाए जा रहे सवालों से परेशान रोमन चर्च ने प्रकाशकों और पुस्तक विक्रेताओं पर कई तरह की रोक लगाई और 1558 ई. से संबंधित प्रतिबंधित किताबों की सूची रखने लगे।

(घ) महात्मा गाँधी ने कहा कि स्वराज की लड़ाई दरअसल अभिव्यक्ति, प्रेस और सामूहिकता के लिए लड़ाई है।

उत्तर– गाँधीजी ने 1920 में असहयोग आंदोलन शुरू किया था। उनका विश्वास था कि स्वतंत्रता सच्चे लोकतंत्र का सर्वाधिक शक्तिशाली सिद्धांत है, इसीलिए उन्होंने प्रेस की आजादी का पक्ष लिया। उन्होंने विचारों की अभिव्यक्ति और बोलने की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया। उन्होंने संघ (संगठन) बनाने के विचार का भी समर्थन किया।

(क) गुटेन्बर्ग प्रेस–

गुटेन्बर्ग प्रेस का मॉडल जैतून प्रेस ही था। इसका निर्माण गुटेनबर्ग ने 1448 ई. में की। इसमें सांचे का उपयोग अक्षरों की धातुई आकृतियों को गढ़ने के लिए किया गया। गुटेन्बर्ग प्रेस में छपी पहली किताब बाइबिल थी। जिसकी 180 प्रतियां बनाने में 3 साल लगे जो उस समय के हिसाब से काफी तेज था।

(ख) छपी किताब को लेकर इरैसमस के विचार–

लातिन के विद्वान और कैथोलिक धर्म सुधारक इरैस्मस जिसने कैथोलिक धर्म की ज्यादतियों की आलोचना की, पर मार्टिन लूथर से भी दूरी बना कर रखी। इरैस्मस प्रिंट को लेकर बहुत परेशान था उसने ऐडेजेज में लिखा–किताबें भिनभिनाती मक्खियों की तरह है, दुनिया का कौन–सा कोना है जहां ये नहीं पहुंच जाती हो सकता है कि जहां–तहां एकाध जानने लायक चीजें भी बताएँ लेकिन इनका ज्यादा हिस्सा तो विद्वता के लिए हानिकारक ही हैं। बेकार ढेर है क्योंकि अच्छी चीजों की अति भी हानिकारक ही है। इनसे बचना चाहिए। मुद्रक सिर्फ तुच्छ चीजों से ही नहीं पाट रहे बल्कि बकवास बेवकूफ, सनसनीखेज, धर्म विरोधी, अज्ञानी और षड़यंत्रकारी किताबें छापते हैं और उनकी तादाद ऐसी है कि मूल्यवान साहित्य का मूल्य भी नहीं रह जाता।

(ग) सुधारक–

उत्तर–(1) समाज सुधारकों ने सामाजिक और धार्मिक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया।

(2) सुधारकों ने पत्र–पत्रिकाओं के द्वारा सती प्रथा, विधवा विवाह, बाल विवाह, मूर्ति पूजा, जाति प्रथा और ब्राह्मण ावाद को समाप्त करने हेतु लेख लिखे।

(3) सुधारक ज्योतिबा फुले ने गुलामगिरि (1871 ई.) में जाति प्रथा के अत्याचारों को छापा।

JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

1. 18वीं सदी के यूरोप में कुछ लोगों को क्यों ऐसा लगता था कि मुद्रण संस्कृति से निरंकुशवाद का अंत और ज्ञानोदय होगा? (Kav 2011)

उत्तर– 18वीं सदी के मध्य तक यह आम विश्वास बन चुका था कि किताबों के द्वारा प्रगति और ज्ञानोदय होता है। कई सारे लोगों का मानना था कि किताबें दुनिया बदल सकती हैं। वे निरंकुशवाद और आतंकी राजसत्ता से समाज को मुक्ति दिलाकर ऐसा समय लाएगी, जब विवेक और बुद्धि का राज होगा। 18वीं सदी फ्रांस के एक उपन्यासकार लुई सेबेस्तिएँ मर्सिए ने घोषणा की ''छापाखाना प्रगति का सबसे ताकतवर औजार है इससे बन रही जन्नत की आंधी में निरंकुशवाद उड़ जाएगा''। ज्ञानोदय को लाने और निरंकुशवाद को नष्ट करने में छापाखाना की भूमिका के बारे में मार्सिए ने कहा– ''हे निरंकुशवादी शासकों अब तुम्हारे कांपने का वक्त आ गया है, आभासी लेखक की कलम के जोर के आगे तुम हील रुठोगे।''

2. कुछ लोग किताबों की सुलभता को लेकर चिंतित क्यों थे? यूरोप और भारत से एक–एक उदाहरण देकर समझाएं। (JAC 2012, 2015)

उत्तर– प्रत्येक व्यक्ति मुद्रित किताब को लेकर खुश नहीं था। जिन्होंने इसका स्वागत भी किया उनके मन में इसको लेकर कई डर थे। कई लोगों को छपी किताब के व्यापक प्रसार और छपे शब्द की सुगमता को लेकर यह आशंका थी कि ना जाने इसका आम लोगों के जीवन पर क्या असर होगा। भय था कि अगर छपे हुए और पढ़े जा रहे किताबों पर, कोई नियंत्रण नहीं होगा तो लोगों में बागी और अधार्मिक विचार पनपने लगेंगे। अगर ऐसा हुआ तो मूल्यवान साहित्य की सत्ता ही नष्ट हो जाएगी।

(ख) गरीब जनता–

उत्तर– (1) गरीब लोगों ने अपने प्रवक्ताओं को अंबेडकर, पेरियार, फुले आदि विद्वानों और जागरूक समाजिक नेताओं में पाया।

(2) 19वीं सदी के उपन्यास लोगों की रोजमर्रा की जिंदगी का चित्रण प्रस्तुत करते थे।

(ग) वर्नाक्यूलर या देसी प्रेस एक्ट– (Jac 2010, 2014)

उत्तर– 1857 ई. के विद्रोह के बाद प्रेस की स्वतंत्रता के प्रति रवैया बदला और आयरिश प्रेस कानून की तर्ज पर 1878 ई. में वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट लागू कर दिया गया। इससे सरकार को भाषाई प्रेस में छपी रपट और संपादकीय को सेंसर करने का व्यापक हक मिल गया। अब सरकार ने विभिन्न प्रदेशें से छपने वाले भाषाई अखबारों पर नियमित नजर रखनी शुरू कर दी। अगर किसी रपट को बागी करार दिया जाता था, तो अखबार को पहले चेतावनी दी जाती थी और अगर चेतावनी की अनसुनी हुई तो अखबार को जब्त कर लिया जाता था और छपाई की मशीनें छीन ली जाती थी।

3. 19वीं सदी में भारत में मुद्रण संस्कृति के प्रसार का इनके लिए क्या मतलब था–

(क) महिलाएँ–

उत्तर– 19वीं सदी भारत में मुद्रण संस्कृति के प्रसार में महिलाओं पर व्यापक प्रभाव पड़ा जो निम्न है–

(1) महिलाओं की जिंदगी और उनकी भावनाओं पर गंभीरता से पुस्तकें लिखी गई।

(2) मध्यवर्गीय घरों की महिलाएं पहले से ज्यादा पढ़ने लगी।

© JCERT not to be republished
JEPC Reference Book for Free Distribution : 2022-23

(3) 19वीं सदी के मध्य में बड़े–छोटे शहरों में स्कूल बने तो उदारवादी पिता और पति महिलाओं को पढ़ने के लिए भेजने लगे।

(4) कई पत्रिकाओं ने लेखिकाओं को जगह दी और उन्होंने नारी शिक्षा की जरूरत पर जोर दिया।

(5) महिलाओं में जागरूकता आई कट्टर रूढ़िवादी परिवार की रशसुंदरी देवी ने रसोई में छिप कर पढ़ना सीखा और आमार आत्मकथा लिखी जो 1876 में छपी।

(1880 ई. के दशक में महिलाओं पर कैलाशबाशिनी देवी ने लिखा। 1880 के दशक में ताराबाई शिंदे और पंडिता रमाबाई ने लिखा।)

4. मुद्रण संस्कृति ने भारत में राष्ट्रवाद के विकास में क्या मदद की? (Jac 2009, 2020)

उत्तर– मुद्रा संस्कृति ने भारत में राष्ट्रवाद के उदय और विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया जो इस प्रकार है–

(1) यह एक शक्तिशाली माध्यम बन गया जिससे राष्ट्रवादी भारतीय देशभक्ति की भावनाओं का प्रसार, आधुनिक आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विचारों का प्रचार तथा जनसाधारण में जागृत का विकास हुआ।

(2) प्रेस के माध्यम से राष्ट्रवादियों के लिए अपने विचारों को जन–जन तक पहुंचाना आसान हो गया।

(3) हिंदी में भारतेंदु हरिश्चंद्र और मैथिलीशरण गुप्त, उर्दू में अल्ताफ हुसैन हाली बांग्ला में रविंद्रनाथ ठाकुर, बंकिम चंद्र चटर्जी, मराठी में विष्णु शास्त्री चिपलंकर, तमिल में सुब्रामण्य भारती और असमी में लक्ष्मीनाथ बेज बरुआ जैसे देशभक्त साहित्यकारों ने भारतवासियों को स्वतंत्रता का मूल्य समझाया।

(4) मुद्रण ने जनसाधारण को स्वतंत्रता के लिए सर्वस्व समर्पण करने की प्रेरणा दी। बंकिम चंद्र चटर्जी रचित गीत वंदे मातरम भारत के जन–जन के लिए स्वाधीनता का स्रोत बन गया। अतः मुद्रण संस्कृति के विकास ने भारतीयों के आत्म गौरव, आपसी प्रेम को जागृत करके उन्हें स्वाधीनता के मार्ग की ओर प्रशस्त किया।

(5) सस्ती पुस्तकों के प्रकाशन से गरीब पाठकों की संख्या में वृद्धि हुई।

(6) वुडब्लॉक बनना एक व्यवसाय बन गया था। इसने रोजगार के अवसरों को बढ़ा दिया था।

इस प्रकार भारत की मुद्रण संस्कृति के विकास से गरीब लोग लाभान्वित हुए।

उदाहरण–

यूरोप– 1558 ई. में रोमन कैथोलिक चर्च ने प्रतिबंधित पुस्तकों की सूची रखनी शुरू कर दी।

भारत– वर्नाक्यूलर या प्रेस एक्ट के द्वारा भारत में भाषाई प्रेस पर नियंत्रण स्थापित किया गया।

3. 19वीं सदी में भारत में गरीब जनता का मुद्रण संस्कृति का क्या असर हुआ? (Jac 2013, 2016, 2018)

उत्तर– 19वीं सदी में मद्रासी शहरों में काफी सस्ते किताबें चौक चौराहों पर बेची जा रही थी। जिसके चलते गरीब लोग भी बाजार से उन्हें खरीदने की स्थिति में आ गए थे।

© JCERT not to be republished

Notes

© JCERT not to be republished